वर्मो च भूतु न्पन: क मी वह्म मी न माथा प्रमुपाया

मोर:मानी

देणरः ५६अ ब्रीस तुर ची विचर मर्म् मिका १ ५०० रूप मर्ग र क्षी मावि एका मार्डिमेर् ५ वर्षे मावि १ वर्ष मार्ग मर्म र का अप अप के विचा क्षेत्र के क्षेत्र में मार्ग स्थित के अप स्थाप मार्ग स्थाप स्

तुन्देमा वर्षाचित्रपानमः । देखा वर्षमाथमाथमान्त्रमान्त्रम् स्थानम्बर्धः साम्यान्त्रम् साम्यान्त्रम् साम्यान्त् देखाः वर्षाच्युत्रपानमः साम्यानम् वर्षमाथमाथमाथमान्त्रमायम् साम्यानम् साम्यानम् साम्यानम् साम्यानम् साम्यानम्

हेला. बोह्मबोडवाञ्चर, उर्बोचभ्रक्केंब्रील. नेटर ब्रेह्र्यर नेटर बोर्ब्स्य आपर्वेबोवाञ्चल. अवश्याहवाबोवाञ्चलन्त्र हेलाञ्चर हेल्काञ्चर स्वीयभावता हो.

देलरः क्रियामच क्रिकीचरत्व अधिव उर्वज्ञासर देवा दर ब्रोट उत्तेजवा हर देवीं पर वा वी जन्मामवा के।

हंबरुदुशक्रुक्तम्यन्वाचिरन्वर्स्त्रन्ति। देलर वह्मभूतिक्रुक्तमान्विक्तमान्विक्रमान्विक्रमान्विक्रमान्वर्षः वर्ष्वपक्षमान्वर्धः वर्ष्वपक्षमान्वर्धः वर्ष्वपक्षमान्वर्षः वर्ष्वपक्षमान्वर्षः वर्षाच्यान्वर्षः वर्षः वर्षाच्यान्वर्षः वर्षाच्यान्वर्षः वर्षाच्यान्वर्षः वर्षाच्यान्वर्षः वर्षाच्यान्व

ट्र.उट्यास्यात्रमः द्रायमाया

£.æ2.0€1

₹.**£**£4.3.71

लाहरामा हुन । अस्ति स्वाप्त स्व स्वाप्त स्

इ.क्ट्राइन।

व्यो न से मा र भु से केरे द्याद्वर द्र र द्वर | दे यम क्षेत्र सुर में वेंच द्वर से द्

≆.क्य.≈ता

. दर्म् च क्षेत्र मा मार्थित स्तरः चव नार्म्या वसरः चवना व्यक्ता स्तरः । चव नार्म्या स्वरः वस्तरः चवना वस्तरः वसरः चन्ना वसरः वसरः चन्ना वसरः वसरः चन्ना वसरः वसरः चन्ना वसरः वसरः चन्ना

≆.क्य.लत

ज्यू यञ्ज या र क्षुव दिरः क्षिय क्षुद्र दर यदिय क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हरे क्षेत्र क्षेत्र हरे क्षेत्र क्

≆.क्थ.लता

सुमा कु जर्देव मा में जनर देर. चार जि. ज्यू च मुख्य मार्ट रूप जर्दूव के मूच रंगर जूरी

≆.क्⊴.जत

द्यागवा राजा और ब्रेस उतर रियो एउं क्रोज स्वार कर मार अञ्चलका कर के काल कर के बाज कर रहे के अपने स्वार कर कर कर काल कर के काल कर के काल कर के काल कर के काल कर कर कर कर काल कर के काल कर के के काल कर कर के काल कर के काल कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर के काल कर काल कर के काल कर के काल कर के काल कर काल कर के काल कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर कर काल कर के काल कर के काल कर कर कर कर के काल कर कर के काल कर के काल कर के काल कर के काल कर कर कर के काल कर काल कर के काल कर के काल कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर के काल कर कर के काल कर कर के काल कर के काल कर काल काल कर काल काल काल कर काल काल कर काल कर काल कर काल कर काल कर का

æ.æg.≺ri

≆.क्⊈.७८।

ह्मेनन्दर्भ अधिवस्तर अहूर्य पर्वर अपरे दुर्दर्भ ह्रेन्स्य जून अपर्यं क्षांत्रर प्रस्तर प्रस्ति चीर दुर्गुनीय ची अपर अपरे क्षांत्र कष्टि क्षांत्र क्षा

¥.क्⊈.‰ता

भुद्रमानास्त्रस्तिम्बन्दन्दर्शनम् उद्यो देवा देव्या देवास्त्रीमान्यान्दर्शनेमान्यान्त्रमान्नेमान्यान्त्रमान्ने

₹.æ2.00±

शुक्रार विकार निर्माल के विकास के क्षेत्र पर पर विकास के प्रकृत के विकास के कि के कि कि कि कि कि कि कि कि कि क

\$.æ2.35±1

भुद्रमाचीजिनकानम् भुद्रमान्द्

¥.क्र्यं.करत

शुर्द्रशनान्तः क्रियामनः इत्यावेषक्षाः अस्त्रमण्यात् वर्षेत्तः नाश्चे वर्क्ष्त्रस्य वर्षेत्रमण्यातः नाश्चे नावेषान्तरः नाश्चे नावेषान्तरः नाश्चे नावेषान्तरः साम्यविष्य

श्री रूप मा मा क्षीत सर सर अपूर्व मिनामन मा के प्राप्तन मा के विस्ता मा क्षीत सर मा के विस्ता मा स्वाप मा के विस्ता मा के व

¥.क्⊈.गे०त

शुद्राचा र ती. वैचा ब्रैट जमा बेर घटना ती. क्षेत्राचट चावव प्यत्से सेवमा ब्रैव ज़ब हे ब्रूट क्रूचा राष्ट्र ब्रूट र र र र रूटी

हीर रूपि रूप तहने जन्म होने के कि हो। हो कुलान हो राजा रूप रूप रूप राजा हो। हो ह

£.42€4.3mm

च.र.अश्व.धरश.कुर्च्च.रंचर.लूरी

मी अन्तर देश ता कोर्ट तत्र तर अद्भुश विरश क्रूच रेचर कोर्ट ता जबू आक्रूचीता आक्षर श्री विरश अर्थ बुद्ध क्रूच रेचर कोर्ट ता जबू शुक्रूच

≆.क्⊈.७०८

जूर्यकूर त्रवातुत्र्या नक्षव सः भ्रुत्रमाथ दरभावतः स्थाप्ताय मान्यः क्ष्याप्रमाय विद्याप्ताय मान्यः स्थाप्ताय मान्य स्थाप्ताय मान्य स्थाप्ताय मान्य स्थाप्ताय मान्य स्थाप्ताय मान्य स्थाप्ताय स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

चाष्ट्रेय सर्द्रमा वृत्ती घरः चाष्ट्रेय सर्द्रमा वृत्त्वीय पर्वे सम्बन्धा स्वत्त्रमा स्वत्त्रमा स्वत्त्रमा स्व

चनतक्दः न्रम् श्रे दिः श्रे श्रे वट्ची श्रे क्वं मी म्टानाबीय न्दः अद्यावी चनुसम्बद्धा अवस्था है हुं सुरी श्रे श्रे प्रमुख माना माने श्राक्ष म्टानी स्थान माने स्थान स्थान

≆.क्ष्यंगेजना

शुर्द्शत्वान्त्रज्ञ. नटःमेट. लटव. इं.क्व्यंवटःजः मैं न्ट्र्यावटवान्तवटःव्वट बुदुन्टर्टवटालूटी

मा-र-मीयन्यरः स्ट-बुट्र्मिन्ट्र्य्यम् न्ट्र्यः मृत्र-द्वार-व्यव्यक्षेत्रः क्षेत्रमर्वेदः क्षेत्रमामा क्षेत्रम्

¥.æ2.i/<ri

₹.**£**£4.1%£1

वीर् असरक्रमान्त्र न्यन्त्र र्ह्न्पान्ने प्रमान्त्र र्ह्न्पान्ने प्रमान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र प्रमान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र प्रमान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्

≆.क्⊴ःःन।

मा.म.जी.खी.म.म.म.कंब.तायु.कूर्याया.उक्क्याया.यु.स.स.कूर्यायाता.म.बू.बू.यु.स्यारा.म.बू.बू.यु.स्यारा.म.बू.बू.यु

चा.जी.त्तर.कूर्यायारा.कुर्या.वर.ठर्स्य.र्ट्या.स्यू.च्यया.कुर्याया.कुर्याया.कुर्याया.कुर्याया.कुर्याया.कुर्याया

इ.क्थं.४३ता

श्रमा मार्थि मार्थि स्थापन क्रिमालिन स्रेट वृष्ट श्रमा मार्थितालयः प्राचन स्थापना मार्थित ज्या नाम्य ज्या जनम्म स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स्थापन स्थापना स्थापन स्य

श्र.च.र.अ. ४८: श्रुट्र मैजायन:वर:श्रांशर:विवयः मूर्चा उर्देश्वेश मूर्वः देवू तटु रंजर्वर राह्मी

परा | देह् , बाजरस्तुकूबाशभ्येबालः | देन्द्र त्याश्वेशकुबाश्वेबस्त्रीम्बुद्धः विभूतुकूबाजग्रजनर्तस्त्र्। भुज्रम्भुम्पद्भिम्बारम्बद्धाशभ्येब्यक्षम् कृत्वाश्वेबस्त्रा कृत्येन्द्रः द्वित्रकृष्ट्यक्षम् अत्याजन्त्रस्त्रम्

£.42€4.53±11

वत्रमान्नीय स्त्राचन क्रिये प्रमाणको क्रिय

≆.क्वं.उस्ता

वा राशः अंबालूबा ५५५ द्वेदास्रः अंबालूबा बास्काव मैच द्वुदान स्टनः देनकः अवाजक स्व क्षेत्रं वालूबा वा बावन क्षेत्रं कर्मः अवालूबा का स्वाद्य स्वादम् वा स्व

चार.री. ब्रैचाम.इम.इम. पर.यूट्र.जै.चामूचा.रर.उद्वेग्नचनुः ररिग्रमूचाम ब्रूचः रेच्रूर्त्तर रेचरः क्रानूरी

¥.क्⊈ःदना

इ.क्ष्यःउत्तर।

मा सर स्थापित के प्राप्त के प्रमुख्य के प

ल्टा बादुचार्यकाभ्रीमकार्यः व्यक्तिवार्यक्षांसकान्तुः चाहुवार्यकान्त्रक्षां च्याचाराकान्त्रक्षां चाहुवार्याचाराकान्त्रक्षां व्यक्तिकान्त्रकात् व्यक्तिकान्त्रकात् व्यक्तिकान्त्रकात् व्यक्तिकान्त्रकात् व्यक्तिकान्त्रकात् व्यक्तिकान्त्रकात् व्यक्तिकान्त्रम् वित्वकान्त्रकान्त्रम्

≆.क्र्यःउल्ला

त्र सर्भुद्रचीहरमसूर्यर्टर होताहे चार अवसूत क्ष्मांभा मुर्चे स्वास्त्र होता स्वास्त्र स्वास्त्र होता स्वास्त्र चार असुमान्य मुर्चे दुर्घू प्रतर प्रत्ये स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

क्रुलीमार्ग्युद्धि कैप्तानर्र्यः क्ष्यां मिन्द्रियम् क्षेत्रमार्थः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्याः क्ष्यां क्ष्याः क्ष्यां क्ष्यां

लमा क्षे.स. ४८ जूदुका संस्तृत्वा मुन्ति नेत्र प्रति मा द्वारा महित्र होते विकास स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्

¥.क्र्यंऽजन।

चार अरस ब्रीचूर्य जन्म नहेत्र हे. बीच लूर स्तु: क्वं सुचारेस हुंग सुचा जन्म अम्बूच रहूंग हुं ब्रीहेस रूप स्तु

इ.श्वं.४८०।

मा म.स. माननामा ना माननामा माननामा

≆.क्ब्र.₃७म।

मार.ती. रस्टर्यस्मी मृत्या जन्न लूकः मैयान नायुष्ठी मृत्ये दितरः वयद्दर्य स्वी स्वी विश्व स्वी विश्व स्वी

र्च अभिस्थानाञ्चन क्षिमान स्थाप क्षित् क्षित्र स्थाप स्थ स्थाप स्

मृत्यान्तर मन्द्रम् नाम् नाद्विनीय स्थान स्थ

इ.क्र्थॐता